मारवाड़ का सागवान
रोहिड़ा "टेकोमेला अन्डूलेटा"

विशेषताऐं एंव लाभ sasdrg mm

- रोहिड़ा का प्रभावी आर्थिक महत्व उसकी उच्च गुणवता की लकड़ी के कारण हैं जिसमे विभिन्न रासायनिक और भौतिक गुण पाऐ जाते है।
- उक्त प्रजाति से प्राप्त लकड़ी मृदु दीर्घावधी के साथ अच्छी पालिश के कारण घरेलू फर्नीचर, खिलोने, खेती में काम आने वाले औजार आदि में प्रयुक्त होती है।
- बहुमूल्य औषधीय गुण होने के कारण रोहिड़ा के वृक्ष का स्वदेशी औषधीय प्रणालियों के लोक एवं शास्त्रीय धाराओं में एक प्रतिष्ठित स्थान है।
- इसकी नरम छाल कई त्वचा रोगों, तिल्ली, सूजाक आदि बीमारियों के निवारण हेतु अथवा विभिन्न आर्युवेदिक मिश्रण तैयार करने हेतु उपयेाग में ली जाती है।
- यह लवणीय क्षारीय रेतीली तथा टिबों वाली मृदा के लिये बहुत ही उपयोगी वृक्ष है।
- यह प्रजाति अपनी जड़ों को जाल के रूप में फैला कर मिट्टी को बाँधने, वायु रोधक और टिब्बास्थिरीकरण मे अपने योगदान के कारण शुष्क क्षेत्रों की पारिस्थितिकी मे महत्वपूर्ण भूमिका सम्पादित करती है।

कृषिवानिकी

- ताजे एकत्रित किये गये बीजो को जून जुलाई माह में प्लास्टिक की थेलियों में अथवा रूट ट्रेनर में बोया जाता है।
- रोहिड़ा के बीजों को सीधी बुवाई द्वारा भी आसानी से उगाया जा सकता है।
- पौधारोपण के लिये प्लास्टिक की थेलियों अथवा रूट ट्रेनर में तैयार की गई पौध को 45*45*45 से.मी. का गडढा बनाकर 5*5 मी. की दुरी पर लगाना चाहिए।
- इसके पौधे को वर्षा ऋतु के दौरान लगाना चाहिए।
- रोपण के बाद भी पौधों में से खरपतवार निकालना बहुत जरूरी होता है।
- सीधे तने वाले वृक्ष प्राप्त करने के लिये आमतौर पर पौधों की छंगाई की जाती है।

आय

- रोहिड़ा मरुभूमि का अत्यन्त महत्वपूर्ण वृक्ष है जिसे मारवाड़ का सागवान भी कहा जाता है क्योकि इसकी लकड़ी सागवान के समान गुणवता वाली कीमती तथा मजबूत होती है।
- खेतों में उगने या उगाने से किसान अपने आपको धन्य मानता है। समय समय पर इसकी लकडी को बेचकर अपनी अर्थिक स्थिति को मजबूत बनाता है।
- इस वृक्ष की कीमत 1000 रूपये प्रतिवर्ष आंकी जाती है यानि 40 वर्ष के वृक्ष की कीमत बाजार में तकरीबन 45000/- से 50000/- रूपये होती है।

संकलनः
देशा मीना
वन अनुवाशिकी एवं वृक्ष प्रजनन प्रभाग

निदेशक
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005